चिड़िया की बच्ची

जैनेंद्र कुमार

माधवदास ने अपनी संगमरमर की नयी कोठी बनवाई है। उसके सामने बहुत सुहावना बगीचा भी लगवाया है। उनको कला से बहुत प्रेम है। धन की कमी नहीं है और कोई व्यसन छू नहीं गया है। सुंदर अभिरुचि के आदमी हैं। फूल-पौधे, रकाबियों से हौजों में लगे फव्वारों में उछलता हुआ पानी उन्हें बहुत अच्छा लगता है। समय भी उनके पास काफी है। शाम को जब दिन की गरमी ढल जाती है और आसमान कई रंग का हो जाता है तब कोठी के बाहर चबूतरे पर तख्त डलवाकर मसनद के सहारे वे गलीचे पर बैठते हैं, और प्रकृति की छटा निहारते हैं। इनमें मानो उनके मन को तृप्ति मिलती है। मित्र हुए तो उनसे विनोद- चर्चा करते हैं, नहीं तो पास रखे हुए फर्शी हुक्के की सटक को मुँह में दिए खयाल ही खयाल में संध्या को स्वप्न की भाँति गुजार देते हैं।

आज कुछ–कुछ बादल थे। घटा गहरी नहीं थी। धूप का प्रकाश उनमें से छन–छनकर आ रहा था। माधवदास मसनद के सहारे बैठे थे। उन्हें जिंदगी में क्या स्वाद नहीं मिला है ? पर जी भरकर भी कुछ खाली–सा रहता है।

उस दिन संध्या समय उनके देखते– देखते सामने की गुलाब की डाली पर एक चिड़िया आ बैठी। चिड़िया बहुत सुंदर थी। उसकी गरदन लाल थी और गुलाबी होते–होते किनारों पर ज़रा–ज़रा नीली पड़ गई थी। पंख ऊपर से चमकदार स्याह थे। उसका नन्हा–सा सिर तो बहुत प्यारा लगता था और शरीर पर चित्र–विचित्र चित्रकारी थी। चिड़िया को मानो माधवदास की सत्ता का कुछ पता नहीं था और मानो तनिक देर का आराम भी उसे नहीं चाहिए था। कभी पर हिलाती थी, कभी फुदकती थी। वह खूब खुश मालूम होती थी। अपनी नन्ही सी चोंच से प्यारी – प्यारी आवाज़ निकाल रही थी।

माधव दास को वह चिड़िया बड़ी मनमानी लगी। उसकी स्वच्छंदता बड़ी प्यारी जान पड़ती थी। कुछ देर तक वे उस चिड़िया का इस डाल से उस डाल थिरकना देखते रहे। इस समय वे अपना बहुत कुछ भूल गए। उन्होंने उस चिड़िया से कहा, ‘‘आओ, तुम बडी अच्छी आई। यह बगीचा तुम लोगों के बिना सूना लगता है। सुनो चिड़िया, तुम खुशी से यह समझो कि यह बगीचा मैंने तुम्हारे लिए ही बनवाया है। तुम बेखटके यहाँ आया करो।’’

चिड़िया पहले तो असावधान रही। फिर जानकर कि बात उससे की जा रही है, वह एकाएक तो घबराई। फिर संकोच को जीतकर बोली, ‘‘मुझे मालूम नहीं था कि यह बगीचा आपका है। मैं अभी चली जाती हूँ। पलभर साँस लेने मैं यहाँ टिक गई थी।’’

माधवदास ने कहा, ‘‘हाँ, बगीचा तो मेरा है। यह संगमरमर की कोठी भी मेरी है। लेकिन, इन सबको तुम अपना भी समझ सकती हो। सब कुछ तुम्हारा है। तुम कैसी भोली हो, कैसी प्यारी हो। जाओ, नहीं, बैठो। मेरा मन तुमसे बहुत खुश होता है।’’

चिड़िया बहुत कुछ सकुचा गई। उसे बोध हुआ कि यह उससे गलती तो नहीं हुई कि वह यहाँ बैठ गई है। उसका थिरकना रुक गया। भयभीत– सी वह बोली, ‘‘मैं थककर यहाँ बैठ गई थी। मैं अभी चली जाऊँगी। बगीचा आपका है। मुझे माफ करें!’’

माधवदास ने कहा, ''मेरी भोली चिड़िया, तुम्हें देखकर मेरा चित्त प्रफुल्लित हुआ है। मेरा महल भी सूना है। वहाँ कोई भी चहचहाता नहीं है। तुम्हें देखकर मेरी रागनियों का जी बहलेगा। तुम कैसी प्यारी हो, यहाँ ही तुम क्यों न रहो ?''

चिड़िया बोली, ''मैं माँ के पास जा रही हूँ, सूरज की धूप खाने और हवा से खेलने और फूलों से बात करने मैं जरा घर से उड़ आई थी,अब साँझ हो गई है और माँ के पास जा रही हूँ। अभी - अभी मैं चली जा रही हूँ। आप सोच न करें।''

माधवदास ने कहा, ''प्यारी चिडिया, पगली मत बनो। देखो, तुम्हारे चारों तरफ कैसी बहार है। देखो, वह पानी खेल रहा है, उधर गुलाब हँस रहा है। भीतर महल में चलो, जाने क्या क्या न पाओगी ! मेरा दिल वीरान है । वहाँ कब हँसी सुनने को मिलती है ? मेरे पास बहुत सा सोना- मोती है। सोने का एक बहुत सुंदर घर मैं तुम्हें बना दूँगा, मोतियों की झालर उसमें लटकेगी। तुम मुझे खुश रखना। और तुम्हें क्या चाहिए ! माँ के पास बताओ क्या है ? तुम यहाँ ही सुख से रहो, मेरी भोली गुड़िया।''

चिड़िया बातों से बहुत डर गई। वह बोली, ''मैं भटककर तनिक आराम के लिए इस डाली पर रुक गई थी। अब भूलकर भी ऐसी गलती नहीं होगी। मैं अभी यहाँ से उड़ी जा रही हूँ। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती हैं। मेरी माँ के घोंसले के बाहर बहुतेरी सुनहरी धूप बिखरी रहती है। मुझे और क्या करना है ? दो दाने माँ ला देती है और जब मैं पर खोलने बाहर जाती हूँ तो माँ मेरी बाट देखती रहती है। मुझे तुम और कुछ मत समझो, मै अपनी माँ की हूँ।''

माधवदास ने कहा, ''भोली चिडिया, तुम कहाँ रहती हो ? तुम मुझे नहीं जानती हो ?

चिडिया, ''मैं माँ को जानती हूँ, भाई को जानती हूँ, सूरज को और उसकी धूप को जानती हूँ। घास, पानी और फूलों को जानती हूँ। महामान्य, तुम कौन हो ? मैं तुम्हें नही जानती ।''

माधवदास, ''तुम भोली हो चिड़िया ! तुमने मुझे नहीं जाना, तब तुमने कुछ नहीं जाना। मैं ही तो हूँ सेठ माधवदास। मेरे पास क्या नहीं है ! जो माँगो, मैं वही दे सकता हूँ।''

चिड़िया, ''पर मेरी तो छोटी सी जान है। आपके पास सब कुछ है। तब मुझे जाने दीजिए।''

माधवदास, ''चिड़िया, तू निरी अनजान है। मुझे खुश करेगी तो तुझे मालामाल कर सकता हूँ।''

चिड़िया, ''तुम सेठ हो। मैं नहीं जानती सेठ क्या होता है। पर सेठ कोई बड़ी बात होती होगी। मैं अनसमझ ठहरी। माँ मुझे बहुत प्यार करती है। वह मेरी राह देखती होगी। मैं मालामाल होकर क्या-होऊँगी, मैं नहीं जानती। मालामाल किसे कहते हैं ? क्या मुझे वह तुम्हारा मालामाल होना चाहिए ?''

सेठ, ''अरी चिड़िया, तुझे बुद्धि नहीं है। तू सोना नहीं जानती, सोना ? उसी की जगत को तृष्णा है। वह सोना मेरे पास ढेर का ढेर है। तेरा घर समूचा सोने का होगा। ऐसा पिंजरा बनवाऊँगा कि कहीं दुनिया में न होगा, ऐसा कि तू देखती रह जाए। तू उसके भीतर थिरक - फुदककर मुझे खुश करियो। तेरा भाग्य खुल जाएगा। तेरे पानी पीने की कटोरी भी सोने की होगी।''

चिडिया, ''वह सोना क्या चीज होती है ?''

सेठ, ''तू क्या जानेगी, तू चिडिया जो है। सोने का मूल्य सीखने के लिए तुझे बहुत सीखना है। बस, यह जान ले कि सेठ माधवदास तुझसे बात कर रहा है। जिससे मैं बात तक कर लेता हूँ उसकी किस्मत खुल जाती है। तू अभी जग का हाल नहीं जानती। मेरी कोठियों पर कोठियाँ है, बगीचों पर बगीचे हैं। दास - दासियों की संख्या नहीं है। पर तुझसे मेरा चित्त प्रसन्न हुआ है। ऐसा वरदान कब किसी को मिलता है ? री चिड़िया ! तू इस बात को समझती क्यों नहीं ?''

चिड़िया– ''सेठ, मैं नादान हूँ। मैं कुछ समझती नहीं। पर, मुझे देर हो रही है। माँ मेरी बाट देखती होगी।''

सेठ– ''ठहर–ठहर, इस अपने पास के फूल को तूने देखा ? यह एक है। ऐसे अनगिनती फूल मेरे बगीचों में हैं। वे भाँति – भाँति के रंग के हैं। तरह – तरह की उनकी खुशबू हैं। चिड़िया, तैंने मेरा चित्त प्रसन्न किया है। और वे सब फूल तेरे लिए खिला करेंगे। वहाँ घोंसले में तेरी माँ है, पर माँ क्या है ? इस बहार के सामने तेरी माँ क्या है ? वहाँ तेरे घोंसले में कुछ भी तो नहीं है। तू अपने को नहीं देखती ? कैसी सुंदर तेरी गरदन । कैसी रंगीन देह ! तू अपने मूल्य को क्यों नहीं देखती ? मैं तुझे सोने से मढ़कर तेरे मूल्य को चमका दूँगा । तैंने मेरे चित्त को प्रसन्न किया है। तू मत जा, यहीं रह।''

चिड़िया, ''सेठ, मैं अपने को नहीं जानती । इतना जानती हूँ कि माँ मेरी माँ है और मुझे यहाँ देर ही रही है। सेठ, मुझे रात मत करो, रात में अँधेरा बहुत हो जाता है और मैं राह भूल जाऊँगी।''

सेठ ने कहा, ''अच्छा, चिड़िया जाती हो तो जाओ। पर, इस बगीचे को अपना ही समझो। तुम बडी सुंदर हो।''

यह कहने के साथ ही सेठ ने एक बटन दबा दिया। उसके दबने से दूर कोठी के अंदर आवाज़ हुई जिसे सुनकर एक दास झटपट भागकर बाहर आया। यह सब छनभर में हो गया और चिडिया कुछ भी नहीं समझी।

सेठ कहते रहे, ''तुम अभी माँ के पास जाओ। माँ बाट देखती होगी। पर, कल आओगी न ? कल आना, परसों आना, रोज आना।''

यह कहते – कहते दास को सेठ ने इशारा कर दिया और वह चिड़िया को पकड़ने के जतन में चला।

सेठ कहते रहे, ''सच तुम बड़ी सुंदर लगती हो! तुम्हारे भाई – बहिन हैं? कितने भाई–बहिन हैं ?''

चिड़िया– ''दो बहिन, एक भाई। पर मुझे देर हो रही है।''

ङ'हाँ हाँ जाना। अभी तो उजेला है। दो बहन, एक भाई है ? बडी अच्छी बात है।''

पर चिड़िया के मन के भीतर जाने क्यों चैन नहीं था। वह चौकन्नी हो – हो चारों ओर देखती थी। उसने कहा, ''सेठ मुझे देर हो रही है।''

सेठ ने कहा, ''देर अभी कहाँ ? अभी उजेला है, मेरी प्यारी चिड़िया ! तुम अपने घर का इतने और हाल सुनाओ। भय मत करो।''

चिड़िया ने कहा, ''सेठ मुझे डर लगता है। माँ मेरी दूर है। रात हो जाएगी तो राह नहीं सूझेगी।''

इतने में चिड़िया को बोध हुआ कि जैसे एक कठोर स्पर्श उसके देह को छू गया। वह चीख देकर चिचियाई और एकदम उड़ी। नौकर के फैले हुए पंजे में वह आकर भी नहीं आ सकी। तब वह उड़ती हुई एक साँस में माँ क पास गई और माँ की गोद में गिरकर सुबकने लगी, ''ओ माँ, ओ माँ !'' माँ ने बच्ची को छाती से चिपटाकर पूछा, ''क्या है मेरी बच्ची, क्या है ?'' पर बच्ची काँप– काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई, बोली कुछ नहीं, बस सुबकती रही, ''ओ माँ, ओ माँ !''

बड़ी देर में उसे ढाढ़स बँधा और तब वह पलक मींच उस छाती में ही चिपककर सोई। जैसे अब पलक न खोलेगी।

शब्द		अर्थ
सुहावना	–	सुन्दर
व्यसन	–	बुरी आदत
अभिरूचि	–	विशेष इच्छा
हौज	–	कुंड
फव्वार	–	अनेक छिद्रोंवाली टोंटी और इससे निकलेवाली धाराएँ
सत्ता	–	अस्तित्व
बे खटके	–	बिना संकोच के
सकुचाना	–	शर्माना, लज्जा करना
मसनद	–	गद्दी

तैं	–	तू
वीरान	–	निर्जन
मालामाल	–	धन–धान्य से संपन्न
किस्मत	–	भाग्य
चौकनी	–	सावधानी
सुबकना	–	हिचकियाँ लेते हुए रोना

अनुशीलनी

बोध और विचार

१. मौखिक

(i) माधवदास का स्वभाव कैसा था ?

(ii) चिड़िया की बच्ची देखने में कैसी थी ?

(iii) माधवदास ने चिड़िया से क्या कहा ?

(iv) चिड़िया उनसे डरकर क्या बोली ?

(v) चिड़िया माधवदास के बगीचे में क्या करने आई थी ?

२. सही कथन के आगे 'हाँ' और गलत कथन के आगे 'नहीं' लिखिए ।

(क) माधवदास मसनद के सहारे बैठे थे ।

(ख) मैं अभी नहीं जाऊँगी । बगीचा मेरा है ।

(ग) मैं अपने बाप की हूँ ।

(घ) सेठ, मैं नादान नहीं हूँ ।

(ङ) वह चीखकर चिचियाई और एकदम उड़ी ।

लिखित :

३. (i) माधवदास अपने को तृप्त करने के लिए क्या करते हैं ?

(ii) किन-किन बातों से ज्ञात होता है कि माधवदास सुखी नहीं था ?

(iii) चिड़िया को देखकर माधवदास के मन में कैसे विचार आए ?

(iv) माधवदास क्या-क्या प्रलोभन देकर चिड़िया को कैद करना चाहता था ?

(v) चिड़िया का सुख असल में किसमें था ?

(vi) चिड़िया ने अपनी माँ की प्रशंसा में क्या कहा ?

(vii) माधव दास और चिडिया के मनोभावों में मूल अंतर क्या था ?

(viii) ''ओ माँ, ओ माँ'' चिडिया यह कब कहती है और क्यों ?

भाषा बोध

४. इस पाठ में 'पर' शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में हुआ है -

(क) गुलाब की डाली पर एक चिड़िया आ बैठी। (ऊपर के अर्थ में)

(ख) कभी पर हिलाती थी। (पंख के अर्थ में)

(ग) पर बच्ची काँप-काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई। (किन्तु के अर्थ में)

इन वाक्यों के आधार पर आप भी तीन अर्थों में 'पर' का प्रयोग करके वाक्य बनाइए।

५. जोड़े मिलान करके लिखिए :

हुक्के की	प्रकाश
नन्ही - सी	सटक
धूप का	चोंचे
संगमरमर की	झालर
मोतियें की	कोठी

६. **लिंग निर्णय कीजिए :**

चबूतरा

संध्या

जिन्दगी

किस्मत

७. **रेखांकित विशेषणों के बदले अन्य विशेषण लिखिए :**

रंगीन देह

सुन्दर गर्दन

कठोर स्पर्श

सुहावना बगीचा

प्यारी चिडिया

८. **'बे - खटका' शब्द में 'बे' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। आप ऐसे 'बे' उपसर्ग लगाकर पाँच शब्द लिखिए :**

९. **पाठ में आए हुए व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञाएँ छाँटकर लिखिए।**

व्यक्तिवाचक जातिवाचक

अनुभव विस्तार :

(i) विभिन्न प्रकार के की चिड़ियों के चित्र उनके घोंसलों के साथ बनाइए।

(ii) मनुष्य, पशु, पक्षी - इन तीनों की माँएँ अपने बच्चों का पूरी तरह ध्यान रखती हैं। आप प्रकृति की इन अद्भुत देन का अवलोकन कर अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।